References:-

1. 'Arya' Mohan Lal (2017); "A Study of Relationship between Leadership Styles of Principal and Teacher Effectiveness", International Journal of Science and Research (IJSR), Volume 6 Issue 1, ISSN: (Online): 2319-7064, January, pp. 963 – 965, Impact Factor- 6.391.
2. 'Arya' Mohan Lal (2018); "Principal's Administrative Effectiveness with Respect Their Educational Supervision and Guidance", Academic Social Research, Volume 4, Issue-3, ISSN: 2456-2645, pp-65-74, March, Impact Factor- 3.267.
3. 'Arya' Mohan Lal (2021), "A Study of Administrative Effectiveness of Principals at Senior Secondary Level", Journal of Interdisciplinary Cycle Research (JICR), February, Volume-XIII, Issue-II, ISSN No.: 0022-1945, Impact Factor- 6.2, Pp- 1365-1369.
4. 'Arya' Mohan Lal and Singh Rajkumari (2017); "A Study of Relationship Between Principal's Administrative Effectiveness and His Institutional Academic Performance of Secondary and Senior Secondary School in Moradabad District", Jabalpur: Global Journal of Multidisciplinary Studies (GJMS)/Global Group of Journals (GGJ), Volume-9, Issue-7, pp-220-231, ISSN:2348-0459, July, Impact Factor- 3.987.
5. Arya' Mohan Lal and Nikita Yadav (2021), "A study of relationship of Academic stress and achievement Motivation among secondary students of Moradabad District", Journal of Interdisciplinary Cycle Research (JICR), May, Volume-XIII, Issue-V, ISSN No.: 0022-1945, Impact Factor- 6.2, Pp- 517-521.
6. Bloom, B.S. Madaus, G.F. and Hastings, J. T. (1981). Evaluation to Improve Learning, New York: McGraw Hill.
7. Erwin, T.D. (1991). Assessing Student Learning and Development: A Guide to the Principles. Goals and Methods of Determining College Outcomes, San Francisco: Jossey Bass.
8. Kumar Narendra, Kumar Rajeev and 'Arya' Mohan Lal (2010); "Principal's Administrative Effectiveness and Institutional Academic Performance of Secondary Schools", Meerut: Journal of National Development (JND) An International Research Journal, Vo-23, Number-2, ISSN: 0972-8309, pp. No.-69-78, Impact Factor- 0.842.
9. Ministry of Education (June 1999). "Our People, Our Future: A Framework for the Development of Human Resources in the Education Sector." Asmara, Eritrea, Ministry of Education (unpublished).
10. National Education policy 2020.
11. Pandey, Mahendra Prasad and Arya Mohan Lal (2019); "Principal's Administrative Effectiveness and His Institutional Academic Performance", Global Journal of Multidisciplinary Studies (GJMS), ISSN: 2348-0459, Volume 8, Issue-4, pp-110-117, March.
12. Rena, Ravinder (2003). "Marks vs. Knowledge – A Shift in Students' Objective in Eritrea", Asmara: Eritrea Profile, Vol. 10, No. 21, (5th July,), p.-5.
13. Rena, Ravinder (2004). Educational Development in Eritrea. Asmara: Eritrea.
14. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2014), ''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
15. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2016), ''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
16. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017), ''अधिगम और शिक्षण'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
17. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017), ''ज्ञान और पाठ्यक्रम'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
18. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2014), ''शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
19. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, (2017), ''अधिगम के लिए आंकलन'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।
20. 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल, 'पाण्डे', डॉ0 महेन्द्र प्रसाद एवं गोला, डॉ0 राजकुमारी, (2023), ''अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान'', आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।

मध्य भारत की जनजातियों में आजीविका के पारंपरिक स्रोत

रमेश लाल केवट
शोधार्थी, जनजातीय अध्ययन विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश)
Rameshlalk94@gmail.com
सपर्क सूत्र -7987584227

शोध सरांश :-

विश्व में जनजातियों की एक बड़ी आबादी भारत में निवास करती है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत जनजातीय है, जिनका विस्तार देश के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में पाया जाता है। भारत की अधिकांश जनजातीय आबादी दुर्गम, पहाड़ी या वन क्षेत्रों में पायी जाती है। इन क्षेत्रों में जनजाति जीवन से जुड़े विभिन्न मुद्दे जैसे की निरक्षरता, कठिन भौगोलिक वातावरण, कुपोषण, पर्याप्त खाद्य संसाधनों की कमी, अस्वच्छता और कमजोर आर्थिक स्थिति आदि मुद्दे जनजातियों को विभन्न प्रकार की आपदाओं और सामयिक परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील बनाते है। इन मुद्दों का असर जनजातियों की आजीविका पर गहन रूप में देखा जाता है। भारत में जनजाति आजीविका स्त्रोतों से जुड़े मुद्दे और बहस कोई नई बात नहीं है, बल्कि यह मुद्दा हमेशा चर्चा का विषय रहा है। भारत के सन्दर्भ में माना जाता है कि विभिन्न कारणों से जनजातीय क्षेत्रों में आधुनिक आजीविका स्त्रोतों की कमी और पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों से जुड़ाव होने से इनकी महत्ता अधिक होती है। यही स्थिति गहन रूप में वर्तमान चयनित क्षेत्र पुष्पराजगढ़ तहसील में भी देखने को मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील की जनजातियों द्वारा अपनी जीवन निर्वाह हेतु उपयोग में लाये जाने वाले पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की पहचान और उनकी भूमिका का आंकलन करने के लिए संपन्न किया गया है। पुष्पराजगढ़ तहसील एक जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है, सन 2011 की जनगणना के अनुसार इस तहसील की कुल 76.8 प्रतिशत आबादी जनजातीय है। पुष्पराजगढ़ एक दुर्गम और सघन वन क्षेत्र है, जहां पर निवासित जनजातियों के जीवन में पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की गहन भूमिका पायी जाती है। इस शोध आलेख में जनजातियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों को प्रमुख चार भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। जैसे कि जंगल, पशुपालन, कृषि और मछलीपालन। इन आजीविका स्त्रोतों का उपयोग क्षेत्र की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। अतः क्षेत्र के मौसम में परिवर्तन होने से आजीविका स्त्रोतों के उपयोग में भी परिवर्तन देखने मिलता है।

बीज शब्द- मध्यप्रदेश, अनूपपुर, पुष्पराजगढ़, जनजातीय समुदाय, सामाजिक-सांस्कृतिक, जीवन निर्वाह, आर्थिक लाभ,

प्रस्तावना-मध्यप्रदेश राज्य एक जनजातीय बाहुल्य प्रदेश है, जिसकी 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 153.17 लाख है। यह जनजातीय आबादी मध्यप्रदेश की कुल आबादी का 21.1 प्रतिशत है। इस राज्य के विभिन्न भागों में रहने वाली जनजातियों में आनुवंशिकता, जीवन शैली, सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक-आर्थिक संरचना, धार्मिक विश्वासों और उनके द्वारा बोली जाने वाली बोली (भाषा) में विविधता देखने को मिलती है। सिंह, दीक्षित और यादव (2019) मानते हैं कि विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक, भौगोलिक, शैक्षणिक और आर्थिक जटिलताओं के कारण मध्य प्रदेश की अधिकतर जनजातियां अन्य समकालीन समुदायों की तुलना में काफी हद तक विकास की मुख्य धारा में पिछड़ गई हैं। मध्य प्रदेश राज्य में 46 मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं, जिनमे से तीन (बैगा, भारिया और सहारिया) की पहचान 'विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह' (PVTG) के रूप में की गई है। मध्य प्रदेश राज्य की मुख्य जनजातियों की बात की जाए तो गोंड, भील, बैगा, कोरकू, भारिया, हलबा, कोल, मारिया और सहरिया आदि जनसंख्या के आधार पर बड़े जनजाति समूह माने जाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उदेश्य पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले पारंपरिक अजीविका स्त्रोतों की वर्तमान स्थिति, महत्ता और जनजातियों की इन स्त्रोतों पर निर्भरता के आंकलन का प्रयास है। आजीविका समय और स्थान के संबंध में गतिशील शब्द है, अतः स्थान परिवर्तित होने से आजीविका का अर्थ भी परिवर्तित हो सकता है। आजीविका पर क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति और संस्कृति का प्रभाव भी देखा जाता है। यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आजीविका का विविधीकरण केवल मौजूदा जीवन स्तर में सुधार के बजाय सर्वांगीण रूप से आने वाले जीवन और पर्यावरण की बेहतरी भी सुनिश्चित करता है। पारंपरिक आजीविका स्त्रोत के उपयोग और महत्ता के संबंध में ज्ञान की एक निश्चित समृद्धि और विविधता अभी भी जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक विरासत के एक हिस्से के रूप में जीवित है। अतः तेजी से बदलते इस मशीनीकरण के दौर में यह अति महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि इस जैव-सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित रखने एवं इसके प्रसार के लिए इस विरासत का उचित रूप में दस्तावेजीकरण किया जाए और साथ ही संबंधित जनजातियों की पहचान के माध्यम से इसे बढ़ावा दिया जाए। इस महत्वपूर्ण ज्ञान की पर्यावरणीय विविधता के सभी घटकों को संरक्षित रखने और इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक स्थायी प्रबंधन दृष्टिकोण के ढांचे के भीतर इस महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत पर विचार करना बहुत आवश्यक हो गया है।

अध्ययन क्षेत्र- प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ तहसील में निवासरित जनजातियों द्वारा आजीविका निर्वाह हेतु उपयोग में लाए जाने वाले पारंपरिक स्त्रोतों की पहचान और उपयोगिता का आंकलन करने के लिए किया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार पुष्पराजगढ़ तहसील में कुल 176,741 जनजातीय आबादी निवास करती है, जो तहसील की कुल जनसंख्या का 76.8 प्रतिशत है। अतः आबादी के आधार पर पुष्पराजगढ़ तहसील एक जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, जिसमें गोंड और बैगा मुख्य जनजातियां हैं। इसके अतिरिक्त पनिका, प्रधान, अगरिया और कोल आदि जनजातियां भी पुष्पराजगढ़ तहसील में निवास करती हैं। इस तहसील का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1652.20 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें कुल 269 गांव और 119 ग्राम पंचायतें मौजूद हैं। क्षेत्रफल के आधार पर देखें तो यह तहसील उत्तर-पश्चिम में उमरिया जिले, उत्तर पूर्व में शहडोल जिले, पूर्व में जतहरी तहसील, दक्षिण-पूर्व में छत्तीसगढ़, दक्षिण पश्चिम और पश्चिम में डिंडोरी जिले से घिरा हुआ भौगोलिक क्षेत्र है। इस तहसील की कुल 96.3 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है जबकि मात्र 3.7 प्रतिशत जनसंख्या अर्ध शहरी क्षेत्र में निवास करती है। पुष्पराजगढ़ तहसील की औसत साक्षरता दर 60.9 प्रतिशत है और औसत लिंगानुपात 994 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष है। इस तहसील में कुल 57 प्रतिशत आबादी कामकाजी है। कुल कामकाजी आबादी में से 59.20 प्रतिशत किसान, 33.43 प्रतिशत खेतिहर मजदूर, 0.89 प्रतिशत घरेलू उद्योग और 6.48 प्रतिशत अन्य कार्यों को करते हैं। भौगोलिक रूप से पुष्पराजगढ़ क्षेत्र बहुत ही दुर्गम, शुष्क और पहाड़ी क्षेत्र है, जहां अधिकतर क्षेत्र में मात्र एक ही फसल (धान) उत्पन्न होती है। अतः इस क्षेत्र में आजीविका स्त्रोत जलवायु और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप अन्य क्षेत्रों से भिन्न होते हैं।

शोध प्रविधि - जैसा कि वर्णित है पुष्पराजगढ़ तहसील एक जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, जो भौगोलिक रूप से बहुत ही दुर्गम, शुष्क और पहाड़ी क्षेत्र माना जाता है। इस क्षेत्र में आधुनिक आजीविका स्त्रोतों की कमी और पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की प्रचुरता के चलते पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातियां अपनी आजीविका निर्वाह हेतु इन्हीं पारंपरिक स्त्रोतों एवं लघु वनोत्पाद पर निर्भर करती हैं। इन स्त्रोतों की जनजातीय जीवन में महत्ता और भूमिका का आंकलन करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन सम्पन्न किया गया है। इस अध्ययन में पुष्पराजगढ़ तहसील में निवासित जनजातियों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, क्षेत्र अवलोकन एवं आजीविका स्त्रोतों से संबंधित तथ्य एकत्रित करने हेतु पूर्ण रूप से गुणात्मक तथ्यों का सहारा लिया गया है। अतः प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु असंरचित साक्षात्कार और अर्ध-सहभागी अवलोकन तकनीक का उपयोग किया गया है। जिसमें शोध उपकरणों के रूप में साक्षात्कार निर्देशिका, अर्ध-सहभागी अवलोकन, आवाज की रिकॉर्डिंग

और फोटोग्राफी तकनीक का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों को संपूर्णता देने के लिए द्वितीयक सूचनाओं की भी सहायता ली गई है, जिसमें विभिन्न दस्तावेजों, शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों और समाचार पत्रों जैसे स्रोतों से तथ्य एकत्रित किए गए हैं। सूचनादाताओं का चयन उदेश्यात्मक निदर्शन तकनीक के माध्यम से किया गया है, जिसमें क्षेत्र के सभी आयु वर्गों के पुरुष और महिलाओं को सम्मिलित किया गया है।

पारंपरिक आजीविका स्त्रोत - पुष्पराजगढ़ तहसील प्राकृतिक रूप से बहुत ही समृद्ध क्षेत्र है, जो प्राकृतिक और मानवनिर्मित आजीविका स्त्रोतों के उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु प्रदान करता है। इस अध्ययन में जनजातियों द्वारा जीवन निर्वाह में उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों को प्रमुख चार भागों जंगल, पशुपालन, कृषि और मछली पालन आदि रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

1)**जंगल से प्राप्त होने वाले आजीविका स्त्रोत**- यह स्त्रोत उन लोगों को संदर्भित करता है, जो जंगल और वन्य क्षेत्रों से अपनी आजीविका का सारांशिक अंश प्राप्त करते हैं। पुष्पराजगढ़ तहसील एक सघन वन क्षेत्र है जहां प्राकृतिक स्त्रोतों की प्रचुरता है। अतः इस क्षेत्र की जनजातियों के जीवन में जंगल से प्राप्त होने वाले प्राकृतिक स्त्रोतों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जिसमें की महुआ, तेंदपत्ता, शहद, अचार की चिरोंजी, काली हल्दी, हर्रा बहेरा, जलाऊ लकड़ी और पशुओं के लिए चारा आदि प्रमुख प्राकृतिक स्त्रोत हैं, जो जनजातियों की आजीविका के मुख्य आधार हैं।

महुआ- भारत की अनेक जनजातियों के लोग महुआ के फूलों, फलों, और बीजों का प्रचुर मात्रा में उपयोग करते हैं। महुआ पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातियों में आजीविका का एक प्रमुख स्रोत है। महुआ एक बड़ा पर्णपाती पेड़ है, जिसका इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। महुए के पेड़ में गर्मी के मौसम की शुरुआत (मार्च महीने) में व्यापक मात्रा में फूल लगते हैं, जिन्हें संग्रहित कर सुखा लिया जाता है। पुष्पराजगढ़ की जनजातियों द्वारा एकत्रित किए गए महुआ के फूलों का कुछ भाग आवक के समय ही साप्ताहिक बाजार में विक्रय कर दिया जाता है।

जनजातियों को महुआ के फूलों की आवक के समय 15 से 20 रुपये और बारिश के मौसम में 35 से 40 रुपये प्रति किलोग्राम का दाम प्राप्त हो जाता है। बाकी शेष भाग को जनजातियों द्वारा वर्ष भर के उपयोग और विक्रय हेतु मिटटी से बने हुए पात्र (कुठली) में सुरक्षित भंडारित कर लिया जाता है। पुष्पराजगढ़ की जनजातियां महुआ के फूलों का उपयोग औषधीय रूप में भी करती हैं। जनजातीय लोग मानते हैं कि महुआ के फूलों की तासीर गर्म होती है, जिसका उपयोग खाद्य पदार्थ के रूप में करने से दमा, निमोनिया, जुखाम और काली खांसी जैसे रोगो से राहत मिलती है। महुआ के फूलों का उपयोग करने के लिए सर्वप्रथम कुछ मात्रा में महुआ के फूलों को हल्की आंच में भुन लिया जाता है, तत्पश्चात इन भुने हुए फूलों को ठण्डा कर चूर्ण बना लिया जाता है। इस चूर्ण को आवश्यकतानुसार गेंहू के आटे में मिलाकर रोटियां बना ली जाती हैं, जो खाने में अत्यंत ही स्वादिष्ट लगती हैं। साथ ही भुने हुए महुआ के फूलों को खाने में उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त जनजातियों द्वारा महुए की शराब (दारू) भी काफी मात्रा में बनाई जाती है जो उनकी आय का एक प्रमुख स्रोत है। अतः पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातियों में महुआ के फूलों का गहन संस्कृतिक, आर्थिक और औषधीय महत्व देखने को मिलता है।

तेंदूपत्ता -तेंदूपत्ता भी इस क्षेत्र की जनजातियों में आजीविका का मुख्य स्रोत है। इसके नये पत्तों का विक्रय किया जाता है, जिनसे बीड़ी का निर्माण किया जाता है। तेंदूपत्ता का आवक समय मई से जून के मध्य होता है, जिस समय जनजातीय लोग नए पत्तों को तोड़कर एक गठ्ठे के रूप में बांधकर उसे सूखने के लिए रख देती हैं। तत्पश्चात बांधे गए गट्ठों को ठेकेदार द्वारा खरीद लिया जाता है। पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में जनजातियों द्वारा बीड़ी बनाने का कार्य नहीं किया जाता है, इसलिए पत्तों का सीधा विक्रय कर दिया जाता है। इस तरह जनजातियों द्वारा तेंदपत्ता का विक्रय कर 5000-6000 रूपए सालाना आय प्राप्त कर ली जाती है।

शहद -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातियों में शहद को एक प्राकृतिक मिठाई मानती है। पुष्पराजगढ़ एक बहुत ही सघन वन क्षेत्र है, जहां शहद का उत्पादन भारी मात्रा में होता है। इस क्षेत्र की जनजातियां शहद के छत्तों को ढूंढने एवं शहद एकत्रित करने में पारंगत होती हैं। जनजातियां एकत्रित की गई शहद का उपयोग औषधि निर्माण (काली खांसी का इलाज), खाद्य पदार्थ (मिठाईयों) और पारंपरिक मान्यताओं को पूरा करने में करती हैं। इसके अतिरिक्त शहद का विक्रय कर आर्थिक लाभ भी कमाती हैं।

बांस -बांस की लकड़ी बहुत मजबूत और टिकाऊ होती है, जिसमें कभी भी घुन नहीं लगता है। पुष्पराजगढ़ के जनजातीय लोगों द्वारा बांस की लकड़ी का कई प्रकार से उपयोग किया जाता है, जैसे कि घर का छप्पर और बाड़े की सीमा निर्मित करने, खिलौने, औजारों में लगने वाली लकड़ी के रूप में और सांस्कृतिक उत्सवों, मेलों और नृत्य-संगीत कार्यक्रमों में सजावटी सामान बनाने आदि में उपयोग किया जाता है। अतः कह सकते हैं बांस एक बहू उपयोगी वस्तु या लकड़ी है, जो पुष्पराजगढ़ की जनजातियों की आजीविका निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

अचार की चिरोंजी और हर्रा बहेरा -अचार एक मौसमी फल प्रदान करने वाला पेड़ है, जिसमें मई से जून के मध्य छोटे-छोटे फल लगते हैं। इन फलों के पक जाने पर इन्हें खाद्य पदार्थ एवं विक्रय हेतु उपयोग किया जाता है। फल खाने के पश्चात प्राप्त गुठलियों को फोड़ लिया जाता है, जिनमें से चिरोंजी (छोटे बीज) निकलती है। जनजातियों का मानना है कि अचार की चिरोंजी बहुत ही स्वादिष्ट और पोष्टिक होती हैं, जिस कारण से इसकी मांग भी बहुत अधिक होती है। चिरोंजियों का आकार काफी छोटा होने के कारण उत्पादन कम होता है किन्तु इसका अच्छा मूल्य लगभग 600-700 रूपए प्रति किलोग्राम प्राप्त हो जाता है, जो जनजातियों को आर्थिक आधार प्रदान करता है। इसके अतिरिक हर्रा - बहेरा भी पुष्पराजगढ़ की जनजातियों में एक मुख्य स्त्रोत माना जाता है। यह एक बहुत ही ठोस फल वाला पेड़ है, जिसकी गुठलियों को फोड़कर प्राप्त बीजों को विक्रय हेतु एकत्रित किया जाता है। जनजातियों द्वारा बहेरा के फलों को एकत्रित कर उसे सुखाने के लिए रख दिया जाता है, फलों के सूखने के पश्चात प्राप्त गुठलियों को फोड़कर बीज निकाल लिए जाते हैं। जिन्हें विक्रय कर आर्थिक आय प्राप्त की जाती है।

विभिन्न औषधियां - पुष्पराजगढ़ क्षेत्र के जंगलों में पारंपरिक औषधियां प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। क्षेत्र में निवासरित जनजातियों में इन औषधियों को प्राप्त करने की जगह, उपयोग की विधि एवं रोग उपचार के संबंध में गहन ज्ञान देखने को मिलता है। पूर्व में जनजातियों द्वारा औषधियों को मात्र समाज सेवा हेतु ही उपयोग किया जाता था किन्तु कालांतर में यह औषधियां आजीविका के एक स्त्रोत के रूप में उपयोग की जाने लगी हैं। पुष्पराजगढ़ तहसील में स्थित अमरकंटक एक बहुप्रसिद्ध प्राकृतिक एवं धार्मिक स्थल है, जहां प्रतिवर्ष लाखों की तादात में श्रद्धालु और पर्यटक यात्रा करने पहुँचते हैं। इस विशेष स्थल पर क्षेत्र की जनजातियां जंगलों से एकत्रित की गई विभिन्न पारंपरिक औषधियों का विक्रय करती हैं, जो जनजातियों की आर्थिक आय में सहायक होता है।

2) पशुपालन - पुष्पराजगढ़ की जनजातियों द्वारा अन्य क्षेत्र की जनजातियों के समान ही विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों जैसे कि गाय, बकरी और मुर्गी आदि का भी उपयोग मुख्य आजीविका स्त्रोत के रूप में किया जाता है, किन्तु पशुपालन इस क्षेत्र की जनजातियों का मुख्य व्यवसाय नहीं है। पशुओं को मात्र घरेलू (दूध और मांस) और कृषि के उपयोग के लिए ही पाला जाता है।

इस क्षेत्र की जनजातियों के लगभग प्रत्येक परिवार में कुछ गाय पाली जाती हैं, जिनका उपयोग मात्र घरेलु उपयोग (दूध की आवश्यकताओं) और खेती में हल चलाने में किया जाता है, गाय का मांस पूर्णतः वर्जित माना जाता है। पुष्पराजगढ़ एक

सघन वन क्षेत्र होने के बावजूद इस क्षेत्र में बैलगाड़ी का उपयोग नहीं किया जाता है। जबकि गाय के विपरीत बकरी एक ठोस आय का साधन है, लगभग प्रत्येक परिवार द्वारा कुछ बकरियां पाली जाती हैं जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर विक्रय कर आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाता है और मांस का खाद्य आपूर्ति में भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त पक्षियों में मात्र मुर्गियों का ही पालन किया जाता है। प्रत्येक परिवार में कुछ देशी मुर्गियां पाली जाती हैं, जो घरेलु खाद्य आपूर्ति एवं विक्रय दोनों रूप में उपयोग में लायीं जाती हैं। वर्तमान में बदलते समय के प्रभाव में दूध का विक्रय कर आय प्राप्त करने हेतु कुछ जनजातीय परिवार भैंस का भी पालन करने लगे हैं। कम पशुपालन का एक मुख्य कारण इस क्षेत्र में उपजाऊ और सिंचित कृषि का आभाव है, जिसके कारण पशुओं को खिलाने के लिए चारे की समस्या उत्पन्न होती है।

3) कृषि से प्राप्त होने वाले आजीविका स्त्रोत -

देश की अन्य जनजातियों के समान ही पुष्पराजगढ़ की जनजातियों का भी मुख्य व्यवसाय कृषि ही हैं। क्षेत्र की जलवायु के अनुसार कृषि से उत्पादित की जाने वाली फसलों और फलों में काफी विविधता देखने को मिलती है, जिस कारण से किसी एक विशेष फसल पर पूर्ण निर्भर नहीं रहा जाता है।

मुख्य फसलें -

पुष्पराजगढ़ का अधिकतर क्षेत्र असिंचित (सूखाग्रस्त) क्षेत्र है, इस कारण से जनजातियों द्वारा अधिक निर्भरता खरीफ की फसलों पर ही की जाती है। अतः इस क्षेत्र की मुख्य फसलें धान, मक्का, सोयाबीन, कोदों और कुटकी हैं। क्षेत्र में रवि की फसलों का उत्पादन बहुत कम किया जाता है, जिसका मुख्य कारण पथरीली जमीन और सिचाई के संसाधनों की कमी है।

धान-

इस क्षेत्र की जनजातियों द्वारा सर्वाधिक उत्पादित की जाने वाली फसल धान है, जो जनजातियो की दैनिक और आर्थिक दोनों आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। चावल इस क्षेत्र की जनजातियों द्वारा उपयोग किया जाने वाला मुख्य खाद्य स्त्रोत भी है, जो जनजातियों की आय का मुख्य स्त्रोत है। जबकि गेंहू या अन्य खाद्य पदार्थ अल्प मात्रा में ही उपयोग किए जाते हैं। इसके अतिरिक वर्ष भर की खाद्य आपूर्ति के लिए भी अनाज सुरक्षित भंडारित कर लिया जाता है। इस क्षेत्र की जनजातियां धान की फसल से सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत जुड़ाव रखती हैं। धान की कटाई के पश्चात नए अनाज के आने की खुशी में जनजातियों द्वारा उत्सव मनाया जाता है, जिसमें समस्त जनजातीय समुदाय के लोग एकत्रित होकर पारंपरिक गीत गाते हैं और नृत्य करते हैं। जनजातियों द्वारा चावल का उपयोग खाने के अलावा पारंपरिक रूप से स्थानीय पेय पदार्थ (कोसना) बनाने में भी किया जाता है।

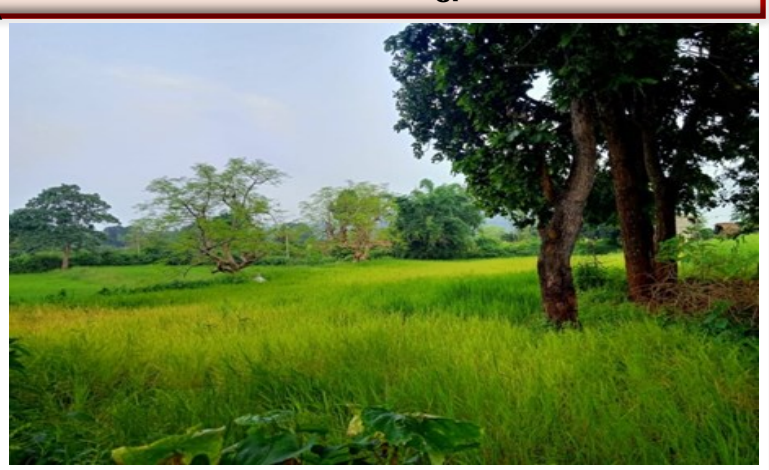

मक्का

इस क्षेत्र में मक्का दूसरी मुख्य फसल है। प्रत्येक जनजाति परिवार प्रतिवर्ष औषतन 400 से 600 किलोग्राम तक मक्का का उत्पादन करता है। जो जनजातियों की घरेलु एवं आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायता करती है। जनजातियों द्वारा मक्का का उपयोग विभिन्न तरीके से किया जाता है, जैसे कि हरे भुट्टे को भूनकर खाद्य पदार्थ के रूप में, इसके अतिरिक्त रोटी बनाकर उपयोग किया जाता है, जो बहुत ही स्वादिष्ट और पोष्टिक होती हैं, साथ ही मक्का का दलिया भी उपयोग में लाया जाता है। मक्के की दलिया को दही या मट्ठा के साथ उबालकर पकाया जाता है, जिसे 'महेरी' कहा जाता है।

सोयाबीन

पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में धान के पश्चात खरीफ की फसल में सोयाबीन एक प्रमुख नगदी फसल है, जो इस क्षेत्र की जनजातियों की आय के प्रमुख स्त्रोतों में से एक है। जनजातियों के अधिकतर खेतिहर परिवार इस फसल से औषतन 15 से 20 क्विंटल अनाज उत्पादित कर लेता है। जिससे जनजातीय किसान परिवार को एक आवश्यक आय प्राप्त हो जाती है। विक्रय के अतिरिक्त जनजातीय लोग सोयाबीन का उपयोग खाद्य के रूप में अधिक किया जाता है, जो उनकी घरेलू अवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होता है।

कोदों और कुटकी

यह दोनों अनाज मोटे अनाज की श्रेणी में आते है, जो सर्वप्रमुख पोष्टिक अनाज माने जाते है। कोदों और कुटकी की सोयाबीन और धान की तुलना में कम उत्पादन क्षमता के चलते पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में कम उत्पादन किया जाता है। कुछ समय पूर्व तक मध्य भारत की लगभग समस्त जनजातियों द्वारा यह दोनों प्रकार के अनाज उत्पादित किए जाते थे किन्तु कालांतर में इनके उत्पादन में कमी आयी है। जबकि पुष्पराजगढ़ के कुछ क्षेत्रों में कोदों और कुटकी के उत्पादन को धान और मक्का के बाद मुख्य फसलों में गिना जाता है। इन फसलों की उत्पादन क्षमता कम होती है, प्रत्येक जनजातीय परिवार औषतन 100 से 150 किलोग्राम कोदों और कुटकी का उत्पादन करता है। यह दोनों अनाज एक ही किस्म के होते हैं अंतर मात्र इनके आकार में होता है। जहां कोदों बड़े आकार के सरसों के बराबर होता है, तो वहीं पर कुटकी थोड़ी छोटी लगभग तिली बीज के बराबर होती है। कोदों का बाजार विक्रय मूल्य भी कुटकी की अपेक्षा अधिक होता है। कोदों का विक्रय मूल्य औषतन 50 से 60 रूपए प्रति किलोग्राम प्राप्त होता तो वहीं कुटकी की अधिकतम 30 से 40 रूपए ही कीमत प्राप्त होती है।

अन्य फसलें -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में उत्पादित की जाने वाली अन्य सहायक फसलों में अलसी, रमतीला, गेंहूँ, चना, मसूर आदि मुख्य सहायक फसलें हैं।

कृषि से प्राप्त होने वाले मुख्य फल एवं सब्जियां - जनजातीय क्षेत्रों में उत्पादित किए जाने वाले प्रमुख फल और सब्जियां स्थानीय जनजातीय समुदायों के लिए महत्वपूर्ण आजीविका स्त्रोत हैं, यह स्त्रोत जनजातीय अर्थव्यवस्था का मुख्य एवं आवश्यक हिस्सा बनते हैं। पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में उत्पादित किए जाने वाले कुछ प्रमुख फल और सब्जियों का यहाँ वर्णन प्रस्तुत किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं।

आम -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में आम का अत्यधिक उत्पादन होता है, जो इस क्षेत्र की जनजातियों में आजीविका का मुख्य स्त्रोत है। पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में बाजार व्यवस्था के आभाव में जनजातियों को आम का सही मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है। इस कारण से एक से अधिक उत्पादन होने के बावजूद आम जनजातीय आजीविका का एक मुख्य स्त्रोत नहीं माना जाता है। अतः इस क्षेत्र की जनजातियों ने आम से आय प्राप्त करने के अन्य पारंपरिक उपाय भी खोज लिए है। जैसे कि आम को छीलकर सुखा लिया जाता है जिसे 'अमकरी' कहा जाता है। जनजातियां अमकरी का सीधा विक्रय भी करती हैं, इसके अतिरिक्त इसे पीसकर बनाया गया अमचूर और आम की गुठली का भी विक्रय कर आय प्राप्त की जाती है।

नींबू -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में नीबू भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण फल माना जाता है, जो घरेलू और विक्रय दोनों रूप में उपयोग किया जाता है। इस क्षेत्र के अधिकतर जनजातीय घरों के आसपास या बाड़ों में नीबू के पेड़ लगे होते हैं। पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जलवायु नींबू के उत्पादन के लिए अत्यधिक उपयुक्त जलवायु प्रदान करती है, जिसके कारण इस क्षेत्र में नींबू का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त नीबू पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति का भी एक अभिन्न भाग है, जनजातीय लोग विभिन्न अनुष्ठानों पर इस फल को एक पवित्र फल के रूप में ईश्वर को अर्पित करते हैं।

केला -केला एक बहुत ही प्रमुख फल है, जो जनजातियों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है। पुष्पराजगढ़ के लगभग प्रत्येक घर के पीछे स्नान करने वाली जगह के पास केले के पेड़ लगाए जाते हैं। पुष्पराजगढ़ के दूरदराज के पिछड़े क्षेत्र जानकारी के आभाव में केले उत्पादन करते हैं, मात्र जनजातियों की घरेलू अवश्यकताओं तक ही सीमित होता है, इसका उन्हें अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। जबकि कुछ विशेष गाँव जो तहसील के आसपास हैं, वे इसके उत्पादन की जानकारी और आर्थिक महत्व के चलते अधिक उत्पादन कर रहे हैं, जो जनजातियों को आर्थिक आय में भी उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

पपीता -पपीता एक अन्य बहु उपयोगी फल है, जो पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जलवायु में प्रचुरता से उत्पादित होता है। यह एक ऐसा फल है, जो इस क्षेत्र की जनजातियों की अधिकतर आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है किन्तु उत्पादन की जानकारी और आर्थिक स्पर्धा के आभाव के चलते इसे मात्र घरेलू उपयोग के लिए ही उत्पादित किया जाता है, इसका कोई विशेष आर्थिक लाभ जनजातियों को नहीं मिल पाता है। जबकि अर्ध शहरी या उसके आसपास के क्षेत्रों में लोग आर्थिक लाभ हेतु पपीते का अधिक उत्पादन कर रहे हैं।

कटहल -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र की जमीन कठहल के उत्पादन के लिए बहुत ही उपयुक्त मानी जाती है, जिस कारण से इस क्षेत्र में में कठहल का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है। चूँकि बाजार व्यवस्था की कमी और अधिक उत्पादन होने से जनजातियों को कटहल का उचित विक्रय मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है। इसके बावजूद बाहरी व्यापारी जनजातीय क्षेत्र में विभिन्न फलों और सब्जियों की खरीद करने आने लगे हैं जो जनजातियो को आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं। जनजातियां कटहल को आपस में एक दूसरे के साथ बांटकर उपयोग करती हैं जिससे उनके आपसी संबंध भी मजबूत होते हैं।

अन्य फल -प्रमुख फलों के अतिरिक्त अमरूद, नाशपाती, बेर, इमली, जामुन और सब्जियों में टमाटर, भटा, आलू और अन्य मौसमी सब्जियां जैसे कि लौकी, गिलकी, कद्दू, ककड़ी, कचरिया और हरे पत्तों वाली सब्जियों का भी उत्पादन पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में होता है, किन्तु इस क्षेत्र में बाजार की उचित व्यवस्था न होने से अधिक उत्पादन होने के बावजूद जनजातियां सही आर्थिक लाभ लेने से वंचित रह जाती हैं।

4) पानी से प्राप्त होने वाले आजीविका स्त्रोत -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में कृषि के बाद मछली पालन एक बहुत ही महत्वपूर्ण पारंपरिक व्यवसाय है, जो जनजातियों के लिए घरेलू खाद्य और आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। इस क्षेत्र में मिलने वाली प्रमुख मछलियाँ जिनके स्थानीय नाम रोहू, कतला, म्रगाल, पड़ीना, और चिलहाटी प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त झींगा और केकड़ा भी आजीविका का एक प्रमुख स्त्रोत माने जाते हैं। इस क्षेत्र में अनेक प्राकृतिक और मानव निर्मित पानी के स्त्रोत मौजूद हैं, जहां से जनजातीय लोग अपनी घरेलू और आर्थिक अवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए मछली और अन्य जलीय जीवों को पकड़ती हैं।

आधुनिक आजीविका स्त्रोतों के आभाव और पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों पर निर्भरता के मुख्य कारक -ऊपर वर्णित तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुष्पराजगढ़ की जनजातियों के जीवन निर्वाह में पारंपरिक आजीविका स्त्रोंतो की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। इस स्थिति के लिए निम्न कारक जिम्मेदार हो सकते हैं।

पारंपरिक स्त्रोतों से सांस्कृतिक जुड़ाव -अनेक शोध कार्यों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत की प्रत्येक जनजातियों का उसके सांस्कृतिक तत्वों के साथ गहन जुड़ाव देखने को मिलता है। पारंपरिक आजीविका स्त्रोत भी जनजातीय संस्कृति का अभिन्न अंग होते हैं। भारत की जनजातियां सदियों से इस अमूल्य ज्ञान को मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करती आ रहीं हैं। इसके विपरीत आधुनिक स्त्रोतों की जानकारी के आभाव में जनजातीय लोगों के बीच इन स्त्रोतों के प्रति उपयोग में झिझक देखने को मिलती है।

आर्थिक विकास के प्रति प्रतिस्पर्धा की कमी -यह एक सर्वविदित तथ्य है कि लगभग सम्पूर्ण विश्व की जनजातियों में अपनी आवश्यकताओं के प्रति संतुष्टि की प्रबल भावना देखने को मिलती है। जनजातियां अपने भौगोलिक परिवेश के आसपास मिलने वाले प्राकृतिक संसाधनों में ही जीवन निर्वाह की प्रवृति विकसित कर लेते हैं। जहां एक ओर इस प्रवृति ने जनजातियों को सदियों तक आत्मनिर्भर रूप से अपने अस्तित्व को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, तो वहीं दूसरी ओर यह प्रवृति जनजातियों के आर्थिक विकास में बाधा भी उत्पन्न करती है। आत्म संतुष्टि की प्रवृति पुष्पराजगढ़ की जनजतियों में भी प्रबल रूप में देखने को मिलती है, जिसके चलते इस क्षेत्र की जनजातियों में आर्थिक विकास के प्रति सजगता कम पायी जाती है।

आधुनिक आजीविका स्त्रोतों का आभाव -अनूपपुर जिले में कुल चार तहसील हैं, जिनमें पुष्पराजगढ़ तहसील भौगोलिक रूप से जिले के आधे भू-भाग में फैला हुआ है। जनजाति जनसंख्यात्मक बहुलता, सांस्कृतिक विविधता और कमजोर आर्थिक स्थिति इस क्षेत्र की पहचान है। इस तहसील में कुल 57 प्रतिशत आबादी कामकाजी है, जिसमें से 59.20

प्रतिशत किसान, 33.43 प्रतिशत खेतिहर मजदूर, 0.89 प्रतिशत घरेलू उद्योग और 6.48 प्रतिशत आबादी अन्य व्यवसायिक कार्यों को करती है। इन आंकड़ों से पुष्पराजगढ़ तहसील में उद्योगिक और अन्य आजीविका स्त्रोतों की आपूर्ति का अंदाजा लगया जा सकता है।

शिक्षा का निम्न स्तर -संपूर्ण विश्व में किसी भी मानव समाज को अपना अस्तित्व संरक्षित रखना होता है। किसी भी स्थिति में शिक्षा के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है। विश्व में कोई भी देश या समुदाय कितना विकसित है, इस तथ्य की वैधता का ज्ञान उस समुदाय विशेष के शिक्षा के स्तर से लगाया जा सकता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत की जनजातियां अन्य वर्गों की अपेक्षा गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, खाद्य संसाधनों की कमी, अस्वच्छता, कमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि समस्याओं से जूझ रही हैं। इन समस्त कारकों का दुष्प्रभाव जनजातियों की आजीविका पर पड़ता है।

उचित जानकारी का आभाव -जैसा कि ऊपर वर्णित कई तथ्य बताते हैं कि पुष्पराजगढ़ में पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की प्रचुरता है। इसके बावजूद इस क्षेत्र में निवासित जनजातियों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर और दयनीय अवस्था में है। इस स्थिति का एक मुख्य कारण इस क्षेत्र की जनजातियों में विद्यमान स्त्रोतों की आर्थिक महत्ता का आभाव है, जो उन्हें प्राप्त पारंपरिक स्त्रोतों के उचित और आवश्यक मूल्य से वंचित करता है।

कमजोर बाजार व्यवस्था -पुष्पराजगढ़ तहसील एक जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, जिसकी कुल जनसँख्या में 76.8 प्रतिशत आबादी जनजातीय है। इस क्षेत्र में आवागमन हेतु कठिन रास्ते, बिखरी हुई जनसंख्या और कमजोर अर्थव्यवस्था के चलते इस क्षेत्र में आजीविका स्त्रोतों के क्रय-विक्रय के लिए बाजार व्यवस्था का अभाव देखने को मिलता है। इस स्थिति के चलते पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की प्रचुरता होने के बावजूद जनजातियों को आवश्यक आर्थिक आय प्राप्त नहीं हो पाती है।

भौगोलिक बाधाएं -पुष्पराजगढ़ तहसील भौगोलिक रूप से एक बहुत ही दुर्गम और सघन वन क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कुछ वर्ष पूर्व तक पक्की सड़कों और अन्य आवागमन के संसाधनों आभाव था। यह स्थिति आवागमन और बाजार व्यवस्था को गहराई से प्रभावित करती है, जिस कारण से इस क्षेत्र की जनजातियां अपनी आजीविका में वृद्धि हेतु शहरी क्षेत्रों से नहीं जुड़ पाती हैं। वर्तमान समय में सरकार के प्रयासों के बाद स्थिति में सुधार हुआ है। जिसके चलते इस क्षेत्र की जनजातियों में आर्थिक प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, जो उनकी आजीविका में भी सुधार हेतु आवश्यक है।

उपसंहार -इस अध्ययन में प्रदत्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुष्पराजगढ़ तहसील में कुछ विशेष पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की प्रचुरता है, जो इस क्षेत्र की जलवायु के अनुसार उपयुक्त हैं। इस क्षेत्र की जनजातियों में पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों के उत्पादन, उपयोग और संरक्षण से संबंधित मगहन ज्ञान पाया जाता है, जिसे वे सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी में मौखिक रूप से हस्तांतरित करती आ रहीं हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न आजीविका स्त्रोतों की उपलब्धता होने के बावजूद अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा जनजातियों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। इस स्थिति के पीछे निम्न कारक हैं जैसे कि जनजातियों की पारंपरिक स्त्रोतों से जुड़ाव, आर्थिक विकास हेतु प्रतिस्पर्धा में कमी, समकालीन समाज से मिलने में संकोच, आधुनिक आजीविका स्त्रोतों की कमी, शिक्षा का निम्न स्तर, उचित जानकारी का आभाव, बाजार व्यवस्था की कमी और भौगोलिक बाधाएं आदि जिम्मेदार हो सकते हैं। जहां एक ओर जनजातियों की पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों पर अधिक निर्भरता जनजाति जीवन का प्रमुख आधार है, जो उन्हें क्षेत्र में अपने अस्तित्व को जीवित रखने के लिए उपयुक्त बनाते हैं। वहीं आधुनिक आजीविका स्त्रोतों की क्षेत्र में कमी भी जनजातियों के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इन बाधाओं को दुरुस्त करने के लिए एक मध्यम मार्ग अपनाया जाना चाहिए। जिसमें पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों के उपयोग को आधुनिक समझ के साथ जोड़ दिया जाए तो परिणाम सार्थक हो सकते हैं।

आवश्यक सुझाव -जनजातीय स्वास्थ्य में आवश्यक सुधार और व्यापक जनजातीय स्वास्थ्य नीति के कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए।

आधुनिक स्त्रोतों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए -कोई भी समाज बदलते समय के साथ अपने आप को बदले बिना अधिक समय तक संरक्षित नहीं रह सकता है। इसके अतिरिक एक देश का सर्वांगीण विकास तभी संभव है, जब उसमें रहने वाले समस्त वर्ग मुख्य धारा में समाहित हों जाए। भारत में जनजातीय समुदाय एक ऐसा वर्ग है, जो अन्य वर्गों की तुलना में आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षणिक रूप से कमजोर माना जाता है। अतः भारत के परिप्रेक्ष्य में यह नहीं कहा जा सकता है कि समस्त वर्गों का एक समान विकास हो रहा है। जिसका एक मुख्य कारण जनजातीय क्षेत्रों में आजीविका स्त्रोतों की कमी है। अतः जनजातीय क्षेत्रों में आजीविका स्त्रोतों की सार्थक वृद्धि कर उन्हें भी समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकता है।

बाजार व्यवस्था को दुरुस्त किया जाना चाहिए -जैसा की तथ्यों के आधार पर विदित है कि पुष्पराजगढ़ तहसील एक दुर्गम ग्रामीण जनजातीय क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पारंपरिक आजीविका स्त्रोतों की प्रचुरता होने के बावजूद आर्थिक आय के संसाधन बहुत कम है। जिसका एक प्रमुख कारण क्षेत्र में बाजार व्यवस्था का आभाव है, जिसके कारण जनजातियां उत्पादित आजीविका स्त्रोतों के क्रय विक्रय से वंचित रह जाती हैं। यदि क्षेत्र में बाजार व्यवस्था को दुरुस्त किया जाता है, तो जनजातियां उत्पादित सामाग्री का विक्रय कर सकती है। यह स्थिति जनजातियों को एक मजबूत आर्थिक आधार प्रदान कर सकती है।

उचित जानकारी का प्रसार होना चाहिए -पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में अनेकों ऐसे स्त्रोत हैं जो बाहरी दुनिया में अमूल्य माने जाते हैं। जनजाति क्षेत्रों में इन स्त्रोतों की प्रचुरता होने के बावजूद उचित जानकारी के आभाव में जनजातियां इनका लाभ लेने से वंचित रह जाती हैं। जैसे कि कटहल शहरी क्षेत्रों में एक बहुत

ही पोष्टिक और महंगी सब्जी मानी जाती है, जिसका पुष्पराजगढ़ क्षेत्र में भारी मात्रा में उत्पादन होता है। जानकारी और बाजार के आभाव में इस क्षेत्र में यह सब्जी एक मुख्य आय का एक ठोस स्त्रोत नहीं मानी जाती है। इसी तरह अन्य अनेकों स्त्रोत जैसे कि शहद, आम, अमरूद, जामुन अत्यधिक मात्रा में उत्पादित होते है, इसके बाबजूद जनजातीया बहुत कम आर्थिक लाभ ले पाती हैं। इस समस्या के निवारण हेतु विभिन्न माध्यमों जैसे कि आँगनवाड़ी एवं स्कूलों में विभिन्न कार्यक्रमों और दरसंचार माध्यमों द्वारा आजीविका स्त्रोतों के संबंध में गहन जानेकारी प्रदान की जा सकती है।

जनजातियों की झिझक को दूर किया जाना चाहिए -भारत में जनजातीय समुदाय बड़े पैमाने पर आधुनिक समाज से अलग कटा हुआ जीवन व्यतीत कर रहा है; वे आधुनिक समाज के संपर्क में आने से झिझकते हैं। भारत सरकार द्वारा इस झिझक को कम करने और जनजाति विकास को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे अनेक प्रयासों के बावजूद सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं। जिससे ज्ञात होता है कि जमीनी स्तर पर विकास नीतियों को ईमानदारी के साथ लागू नहीं किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप आज भी अधिकतर जनजातीय आबादी की आर्थिक स्थिति दयनीय अवस्था में है। अतः जनजातियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान के साथ समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कठोर और व्यापक कदम उठाने की आवश्यकता है। अतः जनजातियों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिए इसके सभी हितधारकों को पूर्ण जिम्मेदारी के साथ कार्य करने की आवश्यकता है, तभी कुछ बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

****

सन्दर्भ सूची

1. Lamichaney, A., Chettri, P. K., Mukherjee, A., Maity, A., & Kumari, S. (2019). Indigenous Methods Of Grain Storage Followed By The Lepcha And Limbo Tribes In The Himalayan Tract Of Sikkim. *Indian Journal Of Traditional Knowledge (IJTK)*, *18*(4), 769-774.
2. Nagnur, S., Channal, G., & Channamma, N. (2006). Indigenous Grain Structures And Methods Of Storage. *Indian Journal Of Traditional Knowledge,* 5(1), 114-117.
3. Dwivedi, M. K., Shyam, B. S., Shukla, R., Sharma, N. K., & Singh, P. K.GIS Mapping Of Antimalarial Plants Based On Traditional Knowledge In Pushparajgarh Division, District Anuppur, Madhya Pradesh, India. *Journal Of Herbs, Spices & Medicinal Plants*, *26*(4), 356-378.
4. *Pushparajgarh Tehsil Population, Caste, Religion Data - Anuppur District, Madhya Pradesh*. (N.D.). Retrieved 08/04/2022, Retrieved From
5. Https://Www.Censusindia.Co.In: Https://Www.Censusindia.Co.In/Subdistrict/Pushparajgarh-Tehsil-Anuppur-Madhya-Pradesh-3696
6. Panduranga, R., Honnurswamy, N.,Status Of Scheduled Tribe In India.*International Journal Of Social Science And Humanities Research*, 2(4), 1
7. Singh, G., Dubey, M. K., Singh, S. R. K., &Meshram, M. (2022). Socio-Economic And Livelihood Pattern Of Ethnic Group Baiga In Baiga-Chak Of Dindori District Of Madhya Pradesh. The Pharma Innovation Journal, 11 (6), 1791-1797
8. Singh S. S. And Sharma A., (2019). A Study Of Composite Index: With Special Context To Gond Tribe Of Central India.*Humanities & Social Sciences Reviews,* 7(6), 1064-1076.
9. Singh, G. Dixit, H. And Yadav, K.S. (2019). Ensuring Livelihood Of Baiga Tribes Through Quality Seed Production Programme. *International Journal Of Current Microbiology And Applied Sciences,* 8(7) 2319-7706.
10. Government Of Madhya Parades Https://Anuppur.Nic.In/En/About-District/

Water crisis in India – Contemporary Perspectives and Paradigms

Saurabh Shubham
Research Scholar
University of Hyderabad

T.N. Mishra
Retired Director
Mines and Geology
Government of Bihar

Abstract: Water crisis and management is a permanent cause of concern for Indian Civilization. The water management issue is of outmost importance with the huge population which India has and needs proper attention with respect to the latest steps by the government of India and its implications on water management in different parts of India. This article focuses on different aspects , especially by the NITI Aayog and government of India to solve the 'water question'. This article also focuses on the international collaborations which India has made while trying to protect its water resources. It also focusses on the awareness level in the common people regarding water management and practices.

Keywords - Water crisis, population, international collaborations, water resources, water management.

1.1 Introduction -Water management in India has gained special attention and expertise ever since the formation of NITI Aayog (National Institution for Transforming India). The NITI Aayog has also given considerable freedom at the local, provincial and regional levels regarding water management and water governance. Apart from this, foreign collaborations like with the countries in the middle east and other parts of the world has also made the task of government easy . But, people in general have to be educated and enlightened about water management and water crisis. The rise of digital governance, and the government scheme DIGITAL INDIA has also promoted water governance, besides helping in public administration.

1.2 Contemporary Indian Scenario and Foreign Collaboration- India has partnered with Israel and other countries of the middle east and Europe to solve the water crisis problem. The rise and growth of water shortage in the several